प्रातः क्लास 17-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

(आज बाप-दादा सवेरे 5 बजे प्रदर्शनी देखने लिये गये थे। वहां संगम, स्वर्ग की ग्राफ्स मॉडल्स देख कर आये तो आज मुरली में भी इस पर ही समझाया है कि अजन इसमें क्या क्या बनाना चाहिए।)

ओमशान्ति। मीठे2 बच्चे प्रदर्शनी देखकर आते हैं तो बुधि में वही याद रहनी चाहिए कि हम कैसे शुद्र थे अभी ब्राहमण बने हैं फिर देवता सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनेंगे। तुम बच्चों ने प्रदर्शनी में मॉडल्स भी रखी है। कलियुग और सतयुग की। अभी यह है संगम युग। यह संगमयुगी मॉडल्स कैसे रखें बीच में। 15-20 सफेद पोशाक वाले बनाना चाहिए तपस्या में। जैसे सूर्यवंशी दिखाई है तो तो चन्द्रवंशी भी दिखाना पड़े। वह भी एक लाइन हो। यह मॉडल्स अच्छे हैं। बाबा ने तो आज ही देखी है। अच्छी है। ऐसा बनाना है जो मनुष्य समझ जाये यह ही तपस्या कर ऐसे बनते हैं। जैसे तुम्हारे शुरू के चित्र भी हैं ना। साधारण तपस्या के और भविष्य राजाई पद की। वैसे यह भी बनाना पड़े। जिनबच्चों के भविष्य के चित्र हैं उनको ही उनको हा फिर सफेद पोशाकधारी बनाकर बिठाना है। तो तुम समझा सकेंगे। यह वह बनते हैं। दिखाना भी एक्युरेट है। हम ब्रहमा कुमारियां यह राजयोग सीख कर यह बनते हैं। तो संगम युग भी जरूर दिखाना पड़े। तुम बच्चे देखकर आते हो तो नालेज सारा दिन बुधि में रहनी चाहिए। तब ही ज्ञान के सागर के बच्चे ज्ञान सागर तुम कहला सकते हो। अगर ज्ञान बुधि में रहे ही नहीं तो ज्ञान सागर थोड़े ही कहेंगे। सारा दिन इस में ही लगा रहे तो बन्धन भी टूटता जावे। हम अभी ब्राहमण हैं। फिर देवता बनते हैं। अगर अच्छी रीतपुरुषार्थ न करेंगे तो क्षत्री कुल में चले जावेंगे। वैकुंठ देख भी न सकेंगे। मुख्य तो है ही वैकुण्ठ। वन्डर आफ वर्ल्ड सतयुग को कहा जाता है। इसलिए पुरुषार्थ करना है। तुम्हारा दोनो ही चीज़ होनी चाहिए। वह रंगीन वस्त्रों गहनों आद से सजाया हुआ और वह सफेद तपस्या का। तो समझेंगे यही सूक्ष्मवतन में बैठे हैं। ड्रेस तो बदल सकते हैं। फिचर्स तो बदल न सकेंगे। वह हुआ अपवित्र प्रवृति मार्ग। वह पवित्र प्रवृति मार्ग। वह विषस मार्ग वह वायसलेस मार्ग यहभी लिखना पड़े कलियुगी विषस मार्गः, सतयुगी वायसलेस मार्ग। बाबा देखकर आये हैं तो ध्यान में लाते हैं क्या 2 होना चाहिए जिससे समझे कि यह स्थापना कर रहे हैं। यही फिर वह बनने वाले हैं। इस समय तुम थोड़े हो। जो मेहनत करेंगे वही पावेंगे ना। ब्राहमण बनने वाले तो बहुत हैं ना। दिन प्रति दिन वृधि को पाते रहेंगे। सारा सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह बुधि में है। तब तो बाबा समझाते हैं ना क्या होना चाहिए। बुधि में है तपस्या कर रहे हैं। फिर यह बनेंगे। इसको ही कहा जाता है स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठना। क्योंकि बुधि में तो सारा नालेज है ना। हम क्या थे फिर अभी क्या बन रहे हैं। स्टुडन्ट्स टीचर को तो जरूर याद करेंगे ना। तुमको भी बाप को याद करना है। याद की यात्रा से ही पाप कटते हैं। आत्मा पवित्र हो जाती है तो फिर शरीर भी पवित्र मिलता है। जो शुद्र से ब्राहमण बनते हैं वही फिर देवता बनते हैं वही फिर असुर बनते हैं। देवता से असुर असुर से देवता कैसे बनते हैं वह सारा दिखलाना है। बाबा नटशे में बताते हैं। बड़ा मॉडल होना चाहिए। जितना बड़ा हो उतना अच्छा है। क्योंकि लिखना भी पड़ता है। संगमयुगी पुरुषोत्तम बनने वाले ब्राहमण पुरुषोत्तम कल्पवृक्ष में तुम हो ब्राहमण। क्योंकि तुमको ही बाप बैठ पढ़ाते हैं। ऊपर भल चित्र भी हो शिव बाबा का। जो तुमको पढ़ाते हैं और तुम यह बनते हो। यह ब्रहमा भी तुम्हारे साथ है। वह भी सफेद पोशाकधारी स्टुडन्ट्स हैं। रामराज्य को बहुत मानते हैं। गायन है ना राम राजा राम प्रजा.... सतयुग में तो धर्म का राज्य है वहीं। बाकी त्रेता में किचड़ा कर दिया है। क्षत्रियों का ग्लानी करदी है। सूर्यवंशी की ग्लानी नहीं की है। तो यह भी लिखना पड़े राम राजा राम प्रजा धर्म का उपकार है। वहां के लिए फिर कितनी ग्लानी की है। बातें बैठ लिखी हैं। जो वहां होती ही नहीं। वह भी सेमी स्वर्ग है। वह स्वर्ग। यह भी तुम लिख सकते हो सेमी स्वर्ग। क्योंकि 4 कला है ना। उनको कोयर कर दो हम क्या बन रहे हैं। हम ही अपने लिए स्वराज्य की स्थापना कर रहे हैं। विश्व में शान्ति का

एक स्वराज्य जो सभी मांगते हैं वह हम स्थापन कर रहे हैं। यह तो तुम चित्रों आद में एड कर सकते हो। क्योंकि तुम्हारे पास अभी आते तो रहेंगे। बाबा देखते हैं तो ख्यालात चलती रहती है। तुम बच्चे घर जावेंगे तो फिर यह सभी बातें भूल जावेंगे। परन्तु यह सभी बुधि में यादरहना चाहिए। ऐसे नहीं कि प्रदर्शनी से बाहर निकले और जेल खलास। अच्छे2 बच्चे जो पुरुषार्थी है उनकी बुधि में टपकना चाहिए। बाबा को टपकता रहता है ना। बुधि में सारा ज्ञान रहेगा तो बाप की भी याद रहेगी। उन्नति को पाते रहेंगे। अगर सतोप्रधान बन बनेंगे तो सतयुग में नहीं आवेंगे। इसलिए याद की यात्रा में अपने को अच्छी रीत पक्का रखना है। तुम राजयोगी हो। तुमको बड़ीजटायें हैं। राजयोगी और योगिन। यह सत्य सजा कर तपस्या का रूप दिखाना है। यह सभी समझने की बातें हैं। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म को छोड़ अपने को आत्मा निश्चयकरो। बाकी सभी देह के सम्बन्ध को भूल जाओ। एक बाप को याद करो। वह तुमको बहुत मालदार बनाते हैं। जीते जी मर जाओ। बाप आकर जीते जी करना सिखलाते हैं। बाप कहते हैं मैं कालों का काल हूं। तुमको ऐसा करना सिखलाता हूं जो कब तुम्हारे दर पर काल आ न सके। वहां तो रावण राज्य ही नहीं। इस पर एक कहानी बैठ बनाई है। सिध करते हैं कि सतयुग में कब काल खाता ही नहीं। उनको अमरपुरी कहा जाता है। रावण राज्य है ही नहीं। बाप तुमको अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। यह है मृत्युलोक। वह है अमरपुरी। यह है रा योग। तुम लिख दो प्राचीन भारत का योग फिर से सिखाया जाता है। जो प्रदर्शनी आद देखते हैं उनको स्प करना चाहिए इसमें और क्या2 एड करें। जिससे मनुष्य स्क्युरेट समझें। इनमें प्रेक्टीकल बहुत अच्छी समझानी है। जो भाडल्स बनाये हैं। यथा राजा रानी तथा प्रजा तो उसमें आ ही जाते हैं। राम फेल हुआ तो कहेंगे उनकी प्रजा भी फेल हुआ। तुम लिख सकते हो समझाने लिए। परन्तु देखा जाता है बिल्कुल ही बन्द बुधि है। समझते ही नहीं। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो मूल जोर रखना ही है इस पर है। विश्व में पवित्रता सुख शान्ति फिर से कैसे स्थापन हो रही है सो तुम समझाते हैं। ऐसे। पर्चे तुम बांट सकते हो। विश्व में दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन होरहा है आकर समझो। तुम अपने लिए ही करते हो। जितनामेहनत करते हो उतना ही पद पाते हो। वह भी नम्बरवार। यहभी दिखा नम्बरवार कैसे2 बनते हैं। प्रजा भी दिखाओ तो शाहुकार प्रजा, सेकण्ड ग्रेड, थर्ड ग्रेड प्रजा भी दिखाओ। ऐसा स्क्युरेट बनाओ जो पूरी अच्छी रीत समझ जाये। मेहनत तो करनी ही है। सेमी तो बाकी थोड़ा है। बाप बैठ थोड़े ही जावेंगा। विनाश शुरु हुआ तो फिर चले जावेंगे। फिर ज्ञान थोड़े ही सुनावेंगे। ज्ञान है ही तुम लिए। तो तुम प्रदर्शनी में ऐसा समझाओ जो मनुष्य समझें हमको एक बाप को ही याद करना है। तब ही हम यह बन सकते हैं। नहीं तो तो फिर भक्ति-मार्ग में आवेंगे। भक्ति है दुर्गति। यह अच्छी रीत बुधि बिठाना है। तुम महारथी बच्चे हो तो तुम्हारी बुधि चलता है। मेल्स भी अच्छे हैं। नम्बरवन तो है जगदीश जो मेगजीन बनाते है। बृजमोहन को भी अच्छा लिखने का शौक है। शायद तीसरा भी कोई निकल आवे। जैसे तुम्हारे में महारथी है वैसे इन में भी हैं। प्रवृति मार्ग है ना। तो जोड़ियां बनती है। फिर स्त्रियां पुरुष बनती है, कोई पुरुष फिर स्त्रियां बनते हैं। ऐसे मत समझना बाबा ने सिर्फ फिर का नाम लिया मेल्स का नहीं लिया। मेल्स भी बहुत ही अच्छे2 हैं। यह कथा है ही सत्य ना। की है। इसलिए विष्णु दिखाया है। दो बनते हैं ना लक्ष्मी और नारायण। हर बात तुम क्लीयर करते जावेंगे दि प्रति दिन। बाप ज्ञान का सागर है। उस परमपिता परमात्मा में तो ज्ञान भरा हुआ है। जैसे गीत सुन हो, सारा रिकार्ड भरा हुआ है। यह भी ऐसे हैं। 8वर्ष है। तो जरूर और भी माल होगा ना। बाप पास जो मिलता रहेगा इमानुसार। यह बच्चों की बुधि में जरूर चलना चाहिए। भले कुछ भी काम काज करो, से भोजन बनाओ बुधि शिव बाबा पास हो। ब्रह्माभोजन भी तो पवित्र चाहिए ना। ब्रह्मा भोजन सो ब्रा भोजन ब्राह्मण ही बनाते हैं। जितना योग में रह बनाते हैं उतना ही भोजन में ताकत आ जाती है।

है देवतायें भी ब्रह्मणों के भोजन की सराहना करते हैं जिससे हृदय शुद्ध होता है। तो ब्राह्मण भी ऐसे होने चाहिए अभी नहीं हैं। क्योंकि देरी है। अभी अगर ऐसे बन जाये तो तुम्हारी बहुत वृद्धि हो जावेगी। परन्तु ड्रामा अनुसार धीरे2 वृद्धि को पाना है। ऐसे भी ब्राह्मण निकलेंगे जो कहेंगे हम तो बाबा की याद में रह भोजन बनाते हैं। बाबा चैलेंज देते हैं नारे साकार ब्राह्मण हो जो योग में रह भोजन बनावे। भोजन पवित्र होना चाहिए ना। भोजन पर बहुत ही मदार है। बाहर में बच्चों को नहीं मिलता है। इसलिए यहां आते हैं। बच्चे रिफ्रेश होवें तो भोजन भी रिफ्रेश हो। योगवाले फिर ज्ञानी भी होते हैं। इसलिए उनको भी बैज देते हैं। जब बहुत हो जावेंगे तो फिर यहां भी ऐसे ब्रह्मणियों को रख देंगे। अभी थोड़े है। नहीं तो महारथियों से भी भोजन पर होने चाहिए जो योग युक्त खाना बने। देवतायें भी समझते हैं। हम यह भोजन खाए देवता बने है। तो ऊंची से ऊंची तुम्हारे साथ मिलने लिए आते हैं। कैसे तुम से मिलते हैं वो भी युक्ती है। सूक्ष्म वतन में वो और यहां मिलते हैं। यह भी वन्डर फुल साक्षात्कार है। वन्डर फुल नालेज है। तो साक्षात्कार भी वन्डर फुल है अर्थ सहित। भक्ती मार्ग में तो साक्षात्कार बहुत मेहनत से होते हैं। नौधा भक्ती करते हैं सिर्फ दीदार के लिए। समझते हैं दीदार होगा तो हम मुक्ति को जावेंगे। उनको यह थोड़े ही पता है कि यह पढ़ाई से बने हैं। यह सूर्यवंशी चन्द्रवंशी पढ़ाई से बने हैं। बाकी जो इतने अनेक चित्र बने हैं। ऐसे तो कुछ भी है नहीं। यह सभी है भक्ति मार्ग का प्रस्तार। बड़ी भारी कारोबार है। अभी ज्ञान और भक्ति का राज़ तुम समझते हो। यह बाप ही समझाते हैं। वही स्प्रीचुअल फादर वही ज्ञान का सागर है। कल्प2 पुरानी दुनिया को नई बनाना, राजयोग सिखाना बाप का ही काम है। परन्तु सिर्फ गीता में नाम बदली कर दिया है। झूठी बातें सुनते2 एकदम पत्थर बुद्धि बन पड़े हैं। बुद्धि मारी गई है। बाप आकर फिर से उस बुद्धि को जगाते हैं। बाप कहते हैं यह भी कल्प2 का खेल है। हम घर से यहां आते हैं पार्ट बजाने। झाड़ के तरफ भी बुद्धि चलनी चाहिए। कुछ किसको समझाया जाये। तुमको कहते हैं क्या हम स्वर्ग में नहीं आवेंगे। बोलो तुम्हारे धर्मस्थापक तो स्वर्ग में आता ही नहीं वह जब स्वर्ग में आवे तो तुम भी जाओ। हरेक धर्म का अपने2 समय पर पार्ट है। यह वैराईटी धर्मों का नाटक बना हुआ है। बनाबनाया खेल है। इसमें कुछ कहने की दरकार ही नहीं रहती। मुख्य2 धर्म दिखाये गये हैं। यह तो बच्चे जानते हैं यह चित्र आदि भी कोई नई नहीं हैं। कल्प2 हू बहू ऐसे ही चलते आवेगा। चित्र भी अनेक प्रकार के पड़ते हैं। पास-पीट आदि की भी लिस्ट पड़ती है ना बच्चों को कितना खुशी है यह आया जाता है। बोलो भगवानुवाच है ना काम महाशत्रु है। हमको रात में स्वप्न में सा0 होता है, विनाश भी देखने में आता है। बाप कहते हैं बच्चे तुम पवित्र बनो, काम को जीतो। इस पर ही झगड़ा होता है। तुम बड़ों2 को युक्ति से पकड़ो। क्योंकि बड़ा समझ जाये तो बड़े का आवाज़ भी बड़ा निकलता है। इस लिए बड़ों को पकड़ते हो। गवर्नर का नाम सुन कर चले आवेंगे। इसलिए युक्ति रची जाती है हो सकता है उन में से कोई अच्छी रीत समझ जाये। बड़ों का नाम सुन कर ढेर हो जावेंगे। हो सकता है कोई बड़ा भी आ जाये। है बहुत मुश्किल। बाबा कितना लिखते हैं उद्घाटन जिससे कराओ उनको समझाओ जरूर कि ऐसे मनुष्य से देवता बन सकते हो। विश्व में शान्ति हो सकती है। स्वर्ग में ही है ही चित्र में शान्ति और सुख। ऐसे2 माया को और अखबार में पड़े तो तुम्हारे इतने ढेर आने लग पड़ेंगे जो तुमको नींद भी करने देंगे। सारा दिन तुम्हारा इस में ही लग जाये। यह भी समय आने वाला है। सर्विस से योग से बल आता है। तुम्हारी कमाई कमाई में रुकावट कभी नहीं आयेगी। उवासी दिवाला निकालने वाले खाते हैं। जो अच्छी रीत समझते हैं याद में रहते हैं उनको उवासी नहीं आवेगी। स्वर्ग में तुमको उवासी नहीं आवेगी। बाप का वरसा पा लिया तो फिर सोना उठना बैठना करना कायदे सिर चलता है। आत्मा लीवर बन जाती है। अभी सलेन्डर को लीवर बनाना है। कोई बना सकते हैं कोई नहीं बना सकते हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।